राष्ट्रीय संगोष्ठी का मूल विषय :

"दर्शन और साहित्य : हजारी प्रसाद द्विवेदी का विशेष सन्दर्भ"

आयोजन तिथि :

24, 25, 26 सितम्बर 2015

आयोजन का स्थान :

हिन्दी भवन परिसर, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन-731235

आयोजक :

भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद, दर्शन-भवन, नई दिल्ली

और

हिन्दी भवन, विश्वभारती, शान्तिनिकेतन

संगोष्ठी का संक्षिप्त प्रारुप :

इस विषय के माध्यम से यह देखने की आवश्यकता महसूस की जाती है कि दर्शन को उसकी वैज्ञानिकता एवं यथार्थता में समझा जाय। इसके साथ यह देखना होगा कि क्या दर्शन अपने मूल स्वरुप में साहित्य में पहुँचता है या अवयव बन जाता है और जीवन की भूमिका में विलचित हो जाता है। अब साहित्य संरचना के साथ दर्शन का निष्कर्षण किया जाने लगता है। इस सैद्धान्तिक विवेचन के साथ यह देखना अपेक्षित होगा कि हिन्दी साहित्य में दर्शन कैसे अन्तर्भुक्त है। साहित्य में पहुँचकर दर्शन का स्वरुप कैसे जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

वैदिक दर्शन से लेकर तमाम भारतीय दर्शनों की पहचान एवं विश्लेषण महत्त्वपूर्ण है। अद्वैतवादी दर्शन को किस प्रकार जीवन तथा जगत् के विश्लेषण के लिए तलाशा गया। नगन्मिथ्या का आधार कैसे निर्गुणी सन्तों के लिए जाति-पाँति और वर्णव्यवस्था के विरोध के लिए फायदेमन्द बना। सन्तों ने इस दर्शन को ही क्यों आधार बनाया। शंकराचार्य का यह दर्शन कैसे जीवन की समता और सार्वजनीनता का आधार बना। निर्गुणत्व और सगुणत्व के बीच एक ऐसा साम्य क्यों बना?

द्वैतवादी दर्शन ने जगत् की अस्मिता को प्रतिपादित तो जरुर किया किन्तु जीवन का धरातल पाकर जीवन हस्तगत हुआ। लौकिकता का आधार पाकर दर्शन का भी लौकीकरण होने लगा। रामकाव्य को पाकर विशिष्टाद्वैत दर्शन सम्पूर्ण जीवन का ही सूक्ष्म दर्शी बना। ईश्वरत्व को मनुष्यता में पहचाना तो मनुष्यता को ईश्वरत्व तक की सम्भाव्य ऊँचाई दी।

कृष्णकाव्य ने तो शुद्धता के बहाने से दर्शन का पूर्णत: लौकिकीकरण किया। लोक जीवन को ही दर्शन की ऊँचाई मिली लेकिन यह ऊँचाई लोक में ही अनुस्यूत हुई। दर्शन लोक की भूमि तलाश करता रहा था।

सूफी-दर्शन ने भी इस्लामिक दर्शन को एक नयी ज़िन्दगी की भूमिका दी। बौद्ध दर्शन हो या जैन दर्शन सबने अपनी अवयवी भूमिका से साहित्य में प्रवेश किया। जीवन बदला, दर्शन बदला, सम्प्रदाय बनाया और अनेक रूपों में हिन्दी साहित्य में उसका प्रयोग हुआ। इस जीवनगत प्रयोग के फायदे को अपनाकर जीवन को किस प्रकार बदला?

दर्शन के यथार्थोन्मुखी होने की प्रक्रिया में हिन्दी साहित्य में कैसे परिवर्तन हुआ। मानवतावाद, मानववाद, यथार्थवाद, गान्धीवाद तथा प्रगतिवाद के सन्दर्भ में साहित्य के मौलिक बदलाव का पुनर्नीरीक्षण आवश्यक है। तमाम नये साहित्य को जीवन के सन्दर्भ में वदलते आयाम का निदर्शन आवश्यक है। इस सन्दर्भ में किसी भी रचनाकार को दृष्टान्त रुप में लिया जा सकता है।

विशेष रूप से देखा जाय कि हजारी प्रसाद द्विवेदी ने विभिन्न हिन्दी साहित्य को किस नजरिये से देखा है? उस नजर का कोण क्या है और उसका दर्शन क्या हो सकता है उसका भी पुनर्मूल्यांकन होना चाहिए।

इस प्रकार यह विश्लेषण विवेचन बड़ा मार्मिक एवं महत्त्वपूर्ण होगा।

संगोष्ठी का उप विषय :

1. दर्शन क्या है? दर्शन और विज्ञान — यथार्थ की तलाश
2. साहित्य में दर्शन का विलयन
3. साहित्य का दर्शन से सम्बन्ध; दर्शन से साहित्य और साहित्य से दर्शन का परिदर्शन
4. हिन्दी साहित्य में अन्तर्भुक्त दर्शन
5. वैदिक दर्शन और हिन्दी साहित्य
6. वेदान्त दर्शन और हिन्दी साहित्य
7. अद्वैतवादी, द्वैतवादी एवं विशिष्टाद्वैत वादी तथा शुद्धाद्वैतवादी दर्शन के सन्दर्भ में हिन्दी साहित्य
8. बौद्ध-दर्शन और हिन्दी साहित्य
9. जैन-दर्शन और हिन्दी साहित्य
10. सूफी-दर्शन और हिन्दी साहित्य
11. भक्ति कालीन साहित्य में हजारी प्रसाद द्विवेदी की दार्शनिक तलाश।
12. हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य में सन्निहित जीवन-दर्शन (क) उपन्यासों में (ख) निबन्धों में (ग) आलोचनात्मक ग्रन्थों में (घ) साहित्य-इतिहास-ग्रन्थों में
13. मानवादी दर्शन और हिन्दी साहित्य : मानववाद यथार्थवाद और मानवतावाद तथा गान्धीवाद तथा प्रगतिवाद के सन्दर्भ में।
14. विभिन्न प्रमुख रचनाकारों के साहित्य में सन्निहित दर्शन — जायसी, कबीर, तुलसी, सूरदास, मीरा, रसखान, रहीम आदि के सन्दर्भ में।
15. आधुनिक हिन्दी साहित्य में बदलता जीवन-दर्शन : वैविध्य का निदर्शन।

आयोजक समिति :

संरक्षक		
उपाचार्य विश्वभारती, शान्तिनिकेतन-731235 (प.बं.)		
सभापति	**सचिव**	**सह सचिव**
प्रोफेसर हरिश्चन्द्र मिश्र प्रोफेसर हिन्दी भवन, विश्वभारती शान्तिनिकेतन-731235 (प.बं.) दूरभाष : 09434375497	डॉ. रेखा ओझा असिस्टेन्ट प्रोफेसर दर्शन एवं तुलनात्मक धर्म विभाग विश्वभारती, शान्तिनिकेतन-731235 (प.बं.) दूरभाष : 08101585736 ई-मेल : drrekha3@gmail.com	प्रोफेसर शकुन्तला मिश्र हिन्दी भवन विश्वभारती शान्तिनिकेतन-731235 (प.बं.) दूरभाष : 09832172393

प्रतिभागियों के लिए नामांकन शुल्क :

एक हजार रुपये मात्र

(दोपहर का भोजन एवं दो चाय के साथ, सेमिनार बैग तथा प्रमाणपत्र दिया जाएगा।)

आवास :

दो हजार रुपये मात्र

(यदि प्रतिभागी पूर्व सूचित करें तो उनके आवास की व्यवस्था की जा सकती है जिसका भुगतान उन्हें ही करना होगा। यदि वे आवास की व्यवस्था स्वयं करेंगे तो दो हजार रुपये नहीं देने होंगे।)

तिथि सूचना :

सारांश प्रेषित करने की तिथि : 15 अगस्त 2015

पूर्ण आलेख प्रेषित करने की तिथि : 10 सितम्बर 2015

स्वीकृति सूचना-तिथि : 15 सितम्बर 2015

कार्यक्रम सूची :

24 September 2015	25 September 2015 (दूसरा दिन)	26 September 2015 (तीसरा दिन)
उद्घाटन का समय : 10 am – 11.30 am	तृतीय सत्र : 10 am – 11.30 am	सप्तम सत्र : 10 am – 11.30 am
चाय अन्तराल : 11.30 am – 11.45 am	चाय अन्तराल : 11.30 am – 11.45 am	अष्टम सत्र : 11.45 am – 1.30 pm
प्रथम सत्र : 11.45 am – 1.30 pm	चतुर्थ सत्र : 11.45 am – 1.30 pm	भोजन अन्तराल : 1.30 pm – 2.30 pm
भोजन अन्तराल : 1.30 pm – 2.30 pm	भोजन अन्तराल : 1.30 pm – 2.30 pm	समापन सत्र : 4.00 pm
द्वितीय सत्र : 3.00 pm – 5.00 pm	पंचम सत्र : 3.00 pm – 4.30 pm	सांस्कृतिक कार्यक्रम : हिन्दी गीत एवं रवीन्द्र नृत्य
चाय : 5.00 pm	चाय : 4.30 pm	
सांस्कृतिक संध्या : 6.30 pm हिन्दी नाटक	षष्ट सत्र : 4.45 pm – 6.15 pm	
	सांस्कृतिक संध्या : 7.00 pm कवि सम्मेलन	